डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–28 अप्रैल, 2020)

छायावाद युग के प्रमुख कवि और काव्य

छायावाद मूलतः सांस्कृतिक स्वच्छन्दतावाद है। वह एक ऐसी सर्वव्यापक, सर्वात्मवादी तथा मानववादी साहित्यिक चेतना है, जो जीवन तथा जगत की जड़ता, इतिवृतात्मकता तथा स्थूलता के विरुद्ध भाव के स्तर पर व्यक्ति स्वातंत्र्य एवं आत्मनिष्ठता को स्वीकार करती है। संस्कृत काव्यधारा में जिस रोमांटिक धारा का आरंभ कालिदास ने किया, रीतिकाल में घनानन्द ने तथा पष्चिमी साहित्य में षेली, वायरन, कीट्स आदि ने किया, उसकी समग्र अभिव्यक्ति अकेले छायावाद में देखने को मिलती है। जयषंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा छायावाद के चार महा स्तंभ हैं, जिनपर छायावाद की साहित्यिक और सांस्कृतिक व्यापकता और गरिमा टिकी है। प्रसाद संस्कृति और दर्षन को स्वर देते हैं तो पंत प्रकृति और उसकी कोमलता तथा कल्पनाषीलता को महत्त्व देते हैं। निराला जहां पौरुष और क्रांति को स्वर देते हैं, वहीं महादेवी वर्मा रहस्य–दर्षन, दुःखवाद एवं नारी की स्वतंत्रता के साथ भावात्मकता को तरजीह देती हैं।

जयषंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत तथा सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के मुख्य आधार स्तंभ हैं। इनके अलावे महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा एवं माखनलाल चतुर्वेदी भी छायावाद के सहयोगी कवि हैं। छायावाद के इस महासागर में और भी अनेक कवियों ने अपना योगदान दिया है, जिसमें भगवती चरण वर्मा, मिलिन्द, बालकृष्ण षर्मा 'नवीन', सुभद्रा कुमारी चौहान एवं रामनरेष त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। छायावादी युग के समकालीन कवियों में हरिवंषराय बच्चन, रामधारीसिंह दिनकर तथा अंचल आदि विषेष उल्लेखनीय हैं।

जयशंकर प्रसाद :– जयषंकर प्रसाद छायावाद के प्रवर्त्तक तथा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार हैं। उन्होंने 'आँसू' काव्य से छायावादी काव्य प्रवृत्ति की बुनियाद रखी थी। वहीं आधुनिक नाटकों की रचना और अपने अनुकूल रंगमंच के निर्माण की मांग से वे काफी चर्चित हुए। यद्यपि प्रसाद जी का अधिकांष समय द्विवेदी युग में व्यतीत हुआ परन्तु इनका मन द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता और वर्णनात्मकता के प्रति विद्रोह करता रहा, जिसके कारण वे अपनी खड़ी बोली की रचनाओं और विषेष रूप से 'आँसू' काव्य में एक नयी काव्यधारा का प्रवर्त्तन किया। छायावाद में इस तरह की व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों को देखकर ही दिनकर ने लिखा,''छायावाद उद्दाम वैयक्तिकता का विस्फोट है।'' नन्ददुलारे बाजपेयी और कुछ अन्य लोगों ने 1919 ई0 में प्रकाषित प्रसाद के काव्य संग्रह 'झरना' से छायावाद का आरंभ माना है। 'झरना' की भूमिका में प्रकाषक का वक्तव्य इस तथ्य को पुष्ट करता है–''जिस षैली की कविता को हिन्द साहित्य में आज दिन 'छायावाद' नाम मिल रहा है, उसका प्रारंभ प्रस्तुत संग्रह द्वारा ही हुआ था।''

जयषंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी के एक प्रतिष्ठित परिवार में सन्1890 ई0 में हुआ और उनकी मृत्यु 1936 ई0 में हुआ। उनके पिता देवीप्रसाद साहू सुघनी साहू के नाम से

प्रसिद्ध थे। वे बड़े दानी थे और खासकर संस्कृत के विद्यार्थियों को खूब मदद करते थे। इन्हें संस्कृत और अंग्रेजी का बेहतर ज्ञान था। कविता और नाटक के क्षेत्र में उन्हें अभूतपूर्व ख्याति मिली। उनका मुख्य काव्य संग्रह है– चित्राधार (1909), कानन कुसुम, प्रेम पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्त्व, झरना (1919), आँसू (1925), लहर और कामायनी (1935)। इनकी विषेष प्रसिद्धि अंतिम चार रचनाओं के कारण हुई। इन रचनाओं के प्रकाषन ने प्रसाद को साहित्य संसार में तुलसीदास के बाद आधुनिक युग के सर्वश्रेष्ठ कवियों के रूप में प्रतिष्ठित किया। 'कामायनी' महाकाव्य तुलसी के 'रामचरितमानस' के बाद सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य है। प्रेमपथिक में प्रसाद जी ने रीतिकालीन स्वच्छंद प्रेम और सौंदर्य को आसमानी हकीकत से जमीनी हकीकत पर लाकर विकास किया। 'आँसू' में प्रेम–सौंदर्य के लौकिक–अलौकिक भावों को अभिव्यक्ति मिली है। आँसू के बाद 'लहर' में अनेक प्रतीकों के माध्यम से मानव भावनाओं और जीवन के द्वन्द्वों को प्रकट किया। सन् 1935 में प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कृति 'कामायनी' महाकाव्य प्रकाषित हुआ। इस काव्य में एक ओर मानव सभ्यता का विकास प्रतीक रूप में वर्णित है। वहीं दूसरी ओर तत्कालीन ब्रिटिष साम्राज्यवाद द्वारा किये जा रहे भारतीय संस्कृति के ध्वंस को दिखाकर एक नयी राष्ट्रीयता को जन–जन में परिचालित किया। 'कामायनी' में प्रकृति वर्णन अत्यंत प्रभावषाली है और मानवीय भावों का चित्रण जलप्लावन की तरह आलोड़ित विलोड़ित द्वन्द्वात्मक और सूक्ष्म है। रूप–सौंदर्य और भाव–सौंदर्य उनके षब्दों में अर्थ गांभीर्य के साथ छलकता है। भाव गांभीर्य में माधुर्य झलकता है। फूलों की तरह क्रमिक रूप में खिलते हुए तथा नीले आकाष में लाल–लाल बिजली के फूल का खिलता स्वरूप और उसके भीतर अठखेलियां करता रूप–सौंदर्य विष्व साहित्य में अद्वितीय है। 'कामायनी' के कुछ चित्र हैं –

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अध खुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग।।

नारी के प्रति उनका सम्मानपरक दृष्टिकोण उनकी भारतीयता को दर्षाती है। एक चित्र है–

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विष्वास रजतपग नग तल में।
पीयूष श्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।।

तत्कालीन समय के जीवन व राजनीतिक विडम्बना को लक्ष्य करते हुए प्रसाद ने लिखा है–

ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की।
एक दूसरे से न मिल सके, यह विडम्बना है जीवन की।।

प्रसाद की 'कामायनी' का आधार भले 'मनुस्मृति' है किन्तु वह विषुद्ध रूप में सामयिक महाकाव्य है। उसमें जीवन दर्षन की विराटता, भावों का अत्यंत सूक्ष्म व गहराई से विष्लेषण, अभिव्यक्ति की कलात्मकता, षब्द–चित्रात्मकता और जीवन के उद्यात लक्ष्यों की ओर अग्रसर होने का प्रेरणात्मक संदेष आदि विषेषताओं के कारण 'कामायनी' तुलसी कृत 'रामचरितमानस' की तरह युग–युग का काव्य बन गयी और प्रसाद तुलसी की तरह लोककंठ में बस गये।

<u>सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'</u> :– निराला आधुनिक युग के एक समर्थ और उत्कृष्ट कवि हैं। उनका जन्म 21 फरवरी, 1896 ई0 में बंगाल के महिषादल राज्य के मेदिनपुर में हुआ था और उनका निधन 15 अक्टुबर, 1961 ई0 में हुआ था। इनके पूर्वजों का घर उन्नाव जिले के

गढ़ाकोला था। अपने छात्र जीवन में वे बंगला में कविता लिखते थे। महज नौ वर्ष की अवस्था में इन्होंने हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर ब्रजभाषा और अवधी में छनद लिखने लगे थे। हिन्दी में कविता लिखने की प्रेरणा इन्हें साहित्यिक संस्कारों में पली बढ़ी अपनी पत्नी से मिली। निराला की खड़ी बोली की सबसे पहले रचना 'जूही की कली' थी। इन्हें जीवन में राग और विराग या स्वरूप और विद्रूप दोनों से प्यार था। इनके व्यक्तित्व में अहं का विस्फोट है वहीं दलितों के प्रति संवेदना भी। इनकी 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में पुरातन परंपरा एवं रूढ़ियों को तोड़ने का उपक्रम है तो नये युग का पथ–सृजन भी।

निराला का प्रथम काव्य संग्रह 'परिमल' (1929) पन्त के 'पल्लव' के समान छायावादी काव्य और इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है। इनके अन्य काव्य हैं– अनामिका, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, कुकुरमुत्ता, बेला, नये पत्ते, अर्चना, आराधना और गीतगुंज। इनकी रचनाओं का एक संग्रह 'अपरा' नाम से प्रकाषित हुआ। 'परिमल' और 'अनामिका' में छायावाद की प्रायः प्रवृत्तियां देखी जा सकती हैं। 'कुकुरमुत्ता की रचना से उनमें प्रगतिवाद का स्पष्ट रूप मिलता है और कहीं–कहीं प्रयोगषील परंपरा की झलक भी मिलती है। 'जूही की कली', 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते', 'गर्म पकौड़ी', 'तुलसीदास', 'सरोजस्मृति' और राम की षक्ति पूजा' आदि छोटी और बेहद लम्बी कविताएं अद्‌भुत हैं, जिनसे उन्हें व्यापक ख्याति और लोकप्रियता हासिल हुई।

काव्यषैली की दृष्टि से निराला में उदात्त गुण विद्यमान है। उनके जागरण गीतों (बादल राग) में ओज की प्रधानता मिलती है। इनके काव्य में मानवप्रेम, देषप्रेम, प्रकृतिप्रेम, दलितप्रेम और अध्यात्म चेतना मुख्य रूप से विद्यमान है। प्रकृति प्रेम का एक चित्र है–

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है
वह संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे धीरे धीरे।

भिक्षुक की भावनाओं का संवेदनात्मक चित्र है–

वह आता
दो टूक कलेजे को करता
पछताता पथ पर आता।

ओजपूर्ण षैली के कारण निराला की कविता अलग दिखलायी पड़ती है। जागरण संदेष का एक ओजपूर्ण चित्र है –

जागो फिर एक बार,
प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें,
अरुण पंख तरुण किरण खड़ खोल रही द्वार
जागो फिर एक बार !

'कुकुरमुत्ता' व्यंग्यपरक रचना है। प्रतीक रूप में पूँजीवादी और श्रमिक वर्ग के जीवन की विषमता का चित्रण है। कुकुरमुत्ता श्रमिक वर्ग का प्रतीक है और पूँजीवादी प्रतीक गुलाब को निर्भय होकर षान से चुनौती देता है –

अबे सुन बे गुलाब,
भूल मत गर पाई खुषबू रंगो आब।

'वह तोड़ती पत्थर' षीर्षक कविता में दलित भावना के साथ पूँजीवाद पर सीधा प्रहार है–

वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर–
वह तोड़ती पत्थड़।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
ष्याम तन भर बंधा यौवन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहारः–
समने तरू–मालिका अट्टालिका, प्राकार।

निराला के व्यक्तित्व का एक पक्ष करुणा और संवेदनषीलता का है। इसका चरम उत्कर्ष 'सरोजस्मृति' में मिलता है। अपनी पुत्री सरोज की अल्पआयु में मृत्यु पर लिखा गया यह विष्व–साहित्य का अनूठा और अतुलनीय षोकगीत है। इसमें पिता की करुण भावना, ब्राह्मणवाद, भ्रष्टाचार, आचरण–व्यवहार और सामान्य जीवन के विविध पक्षों पर खुलेआम आक्रोष प्रकट हुआ है। 'राम की षक्ति पूजा' उनकी सर्वाधिक उत्कृष्ट रचना है। इसमें राम के माध्यम से तत्कालीन गुलामी, संघर्ष और आजादी के जय–पराजय का द्वन्द्व लिपिबद्ध है। एक चित्र है–

रवि हुआ अस्त
ज्योर्तिपत्र पर लिखा रह गया
राम–रावण का अपराजेय समर।

और– होगी जय ! होगी जय ! हे पुरुषोत्तम नवीन।

<u>सुमित्रानंदन पंत</u> :– साहित्य में छायावादी युग के चार स्तंभों में से एक हैं। सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 को उत्तरांचल के जिला अल्मोड़ा के कौसाम्बी गांव में हुआ था और उनका निधन 28 दिसंबर, 1977 को हुआ। इनकी मुख्य रचनाएं हैं– वीणा, पल्लव, चिदंबरा, युगवाणी, लोकायतन, युगपथ, स्वर्णकिरण, कला और बूढ़ा चाँद आदि। उनका कर्मक्षेत्र इलाहाबाद था। वे एक ही साथ अध्यापक, लेखक और कवि थे। इन्हें 'चिदंबरा' पर ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्मभूषण, साहित्य अकादमी और 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हुआ।

सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति चित्रण अनूठा और अद्वितीय है। इनमें कवि की निजी भावुकता और कल्पनाषीलता का रंग घुला–मिला है। इस रंग में उन्होंने जीवन और जगत, साहित्य, समाज और प्रकृति को लिपिबद्ध किया है। इनपर अंग्रेजी के षेली, कीट्स, वायरन और वड्र्सवर्थ का व्यापक प्रभाव था। उन्हें हिन्दी का विलियम वड्र्सवर्थ कहा जाता है। उनकी रचनाओं में समाज के यथार्थ के साथ–साथ प्रकृति और मनुष्य की सत्ता के बीच टकराव भी होता था। उन्होंने हरिवंष राय बच्चन और श्री अरविंदो के साथ अधिक समय बिताया था। उन्हें प्रकृति के सुकोमल कवि के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कविता को हृदय की उत्कट अभिव्यक्ति के रूप में देखा और लिखा–

वियोगी होगा पहला कवि
आह से ऊपजा होगा गान।

पंत की विचारधारा मूलतः 'सत्यम षिवं सुन्दरम्' पर आधारित था। बावजूद इसके वे समय के साथ अपने व्यक्तित्व को ढ़ालते रहे। उनकी प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य का चित्रण मिलता है। दूसरे चरण की उनकी कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं, कोमल भावनाओं का चित्रण है। उनके तीसरे चरण या अंतिम चरण की कविता प्रगतिवादी दौर की कविता है। पंत और निराला छायावाद के बाद प्रगतिवाद के प्रवर्तक बने। प्रगतिवादी कविताओं में प्रगतिषीलता के दर्षन मिलते हैं। बाद की कविताएं अरविंद दर्षन और मानव कल्याण की भावनाओं से परिचालित है। उनकी दृष्टि के केन्द्र में कविता का गान मानवता के हित के लिए था। उन्होंने लिखा है–

गा कोकिला संदेष सनातन,
मानव का परिचय मानवपन।

<u>महादेवी वर्मा</u> :– महादेवी वर्मा छायावाद के चार स्तंभों में एक हैं। आधुनिक हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक आधुनिक युग की मीरा मानी जाती हैं। उनका समस्त काव्य करुणा, दुःख, पीड़ा से युक्त है। खासकर नारी की पीड़ा और स्वतंत्रता का वे प्रबल आग्रही रही हैं। मन की पीड़ा को उन्होंने प्रेम और श्रृंगार से सजाकर पेष किया। 'दीपषिखा' काव्य संग्रह में उन्होंने जन–जन की पीड़ा को अभिव्यक्त कर स्व से अन्य की ओर अपने को मुखरित किया है। उनका जीवन साथी डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा थे, जिनका षादी के तुरन्त बाद निधन हो गया था।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च, 1907 को उत्तर प्रदेष के फर्रुखाबाद में हुआ था और देहावसान लगभग 80 वर्ष की आयु में 11 सितम्बर, 1987 को इलाहाबाद में हुआ। उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी कविता में उस कोमल षब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल ब्रजभाषा में ही संभव था। उन्होंने संस्कृत और बांग्ला के कोमल षब्दों को चुनकर हिन्दी गीतों में प्रयुक्त कर नाद सौंदर्य और व्यंजना षैली को अनूठे रूप में प्रकट किया। उनकी प्रमुख कृतियां हैं– **कविता–संग्रह** :– नीहार (1930), रष्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपषिखा (1942), सप्तपर्णा (अनूदित 1959), प्रथम आयाम (1974), अग्निरेखा (1990)। **रेखाचित्र**:– अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएं (1943)। **संस्मरण** :–पथ के साथी (1956), मेरा परिवार (1972) और संस्मरण (1983)। **निबंध** :– श्रृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962) और संकल्पिता (1969)। इसके अतिरिक्त अनेक ललित निबंध, समालोचना और कहानियां आदि महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' और 'रंगवाणी' संस्था की स्थापना की।

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि छायावाद हिन्दी साहित्य के रोमांटिक उत्थान की एक ऐसी काव्यधारा है, जिसमें प्रसाद, पंत, निराला और महादेवी वर्मा प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। इस युग में खड़ीबोली के अप्रतिम विकास को लेकर कुछ लोग इसे ''साहित्यिक खड़ीबोली का स्वर्णयुग'' कहते हैं। नयी अभिव्यंजना प्रणाली, वैयक्तिकता तथा नयी वैचारिकी की षुरुआत इस युग की महत्त्वपूर्ण विषेषताएं हैं। वह स्थूल वस्तु पर मन की अनुभूतियों की अत्यंत सूक्ष्म और चंचल छाया है, जहां प्रकृति प्रेम, सौंदर्य, स्वातंत्र्य, नारी मुक्ति और दर्षन के विविध सौंदर्य एक साथ उपस्थित दिखलायी पड़ते हैं।

दिनांक : 28/04/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**